DR.MALA KUMARI

ASSISTANT PROFESSOR (GUEST

TEACHER)

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY

A.N.D COLLEGE SHAHPUR

PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)

PAPER-4 ,UNIT-7 ,

THE CONTRIBUTIONS OF MASLOW

LECTURE – 90

LECTURE -89 का शेष भाग

मैसलो का योगदान (CONTRIBUTIONS OF MASLOW)

आत्म –सिद्धि की आवश्यकता (SELF –ACTUALIZODION NEED)

आत्म –सिद्धि की आवश्यकता व्यक्ति में तब उत्पन्न होता है जब उपर्युक्त चारो तरह की आवश्यकताएँ तुष्ट हो जाती है |आत्म -सिद्धि से तात्पर्य आत्म-पूर्ति की आवश्कयता ,अपनी अन्तः शक्तियों को अनुभव करने या उसका ज्ञान होने से तथा सही अर्थ में सर्जनात्मक बनने में होता है |दुसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि आत्म – सिद्धि की आवश्यकता से तात्पर्य अपनी अन्तः शाक्ति के शिखर पर पहुँचने से होता है ,ताकि वह पूर्ण रूप से एक कार्य सम्पन्न व्यक्ति बन सके | इस संप्रत्यय के प्रतिपादन

में मैसलो (1970) ने कर्ट गोल्डस्टीन के प्रति अपना आभार व्यक्त किया है | मैसलो का मत है कि सचमुच में आत्म –सिद्धि की आवश्यकता एक विस्तृत आवश्यकता है जिसमें 17 मेटा आवश्यकताएँ होती है | इन मेटा आवश्यकताओं की कोई अनुक्रम नहीं होता है और सभी बराबर रूप से सामर्थ्य होते है | मेटा आवश्यकता के कुछ उदाहरण हैं –पूर्णता ,सुन्दरता , उत्तमता ,सफाई आदि की आवश्यकता |

उपर के पाँचो तरह की आवश्यकता क्रियात्मक आवश्यकता है जिन्हें मैसलो के अनुसार मौलिक आवश्यकता कहा जाता है |मैसलो ने इससे संबंधित दो पदों का प्रतिपादन किया है –अभाव की आवश्यकता तथा बर्द्धन की आवश्यकता |

मैसलो ने यह बतलाया है कि मात्र 10 %.लोग ही आत्म –सिद्धि की आवश्यकता के स्तर तक पहुँच पाते है | इन्होंने उन व्यक्तियों की जिसमें आत्म –सिद्धि की आवश्यकता होती है , की कुछ विशेषताएँ बतलाया है | इसमें निम्नांकित प्रमुख है -

(I)ऐसे व्यक्तियों में वास्तविकता का प्रत्यक्षण अधिक मजबूत होता है |ऐसे लोगों में किसी तरह का पूर्वाग्रह नहीं होता है | फलस्वरूप, इससे वास्तविकता का प्रत्यक्षण में विकृति नहीं अति है |

(II) ऐसे व्यक्ति अपने आत्मन् को पुर्णतः समझते है तथा इनमें रक्षात्मक व्यवहार कम होते है इनमें आत्म –पराजित दोष भाव भी नहीं होते है |

(III) ऐसे लोगों की प्रकृति न तो रूढ़ीवादी होती है और न कृत्रिम होती है | अतः ऐसे लोगों में स्वाभाविकता ,सहजता तथा स्वतः प्रवृति का गुण होता है |

(IV) इन लोगों की अभिरुचि बाहरी समस्याओं में अधिक होता है |ऐसे लोग कुछ स्पष्ट उद्धेश्य बनाकर काम करते है |

(V)इन लोगों में स्वायत्तता तथा गोपनीयता का गुण होता है | ऐसे लोगों में निर्लिप्तता या तटस्तथा का भी गुण होता है | ऐसे लोग कई लोगों के बीच में होकर भी एकांतवासी हो सकते है |

(VI) ऐसे लोगों में प्रशंसा की उत्तम भाव सतत होती है |ऐसे लोग अपने उत्तम भाग्य एवं स्वास्थ्य से हमेशा अवगत होते है |

(VII) ऐसे लोगों में पूर्ण परिशुद्धता की भावना होती है |

मैसलो ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आत्म –सिद्धि की अवस्था सम्पूर्ण या कुछ नही (ALL –OR –NONE) की प्रक्रिया नहीं होती है बल्कि इस अवस्था में भी मात्राएँ होती है |कोई भी मानव पुर्णतः आत्म –सिद्धि नही होती है |यहाँ तक आत्म –सिद्धि लोगों में भी कुछ कमजोरियाँ ,सांवेगिक असंगतताएँ आदि होती है |

यद्धपि मैसलो का योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा है ,इनकी कुछ हल्की –फुल्की आलोचनाएँ भी की गयी है |आलोचकों का मत है कि उनके द्वारा बतलाये गए आवश्यकता के विभिन्न श्रेणीयाँ एक –दुसरे से स्वतंत्र न होकर एक –दुसरे पर परस्पर आच्छादित है |आलोचकों का मत है कि व्यक्ति एक समय में एक से अधिक आवश्यकताओं से भी प्रेरित हो सकता है जबकि मैसलो का मत था कि एक समय में एक ही श्रेणी की आवश्यकता से व्यक्ति का व्यवहार प्रेरित हो सकता है |